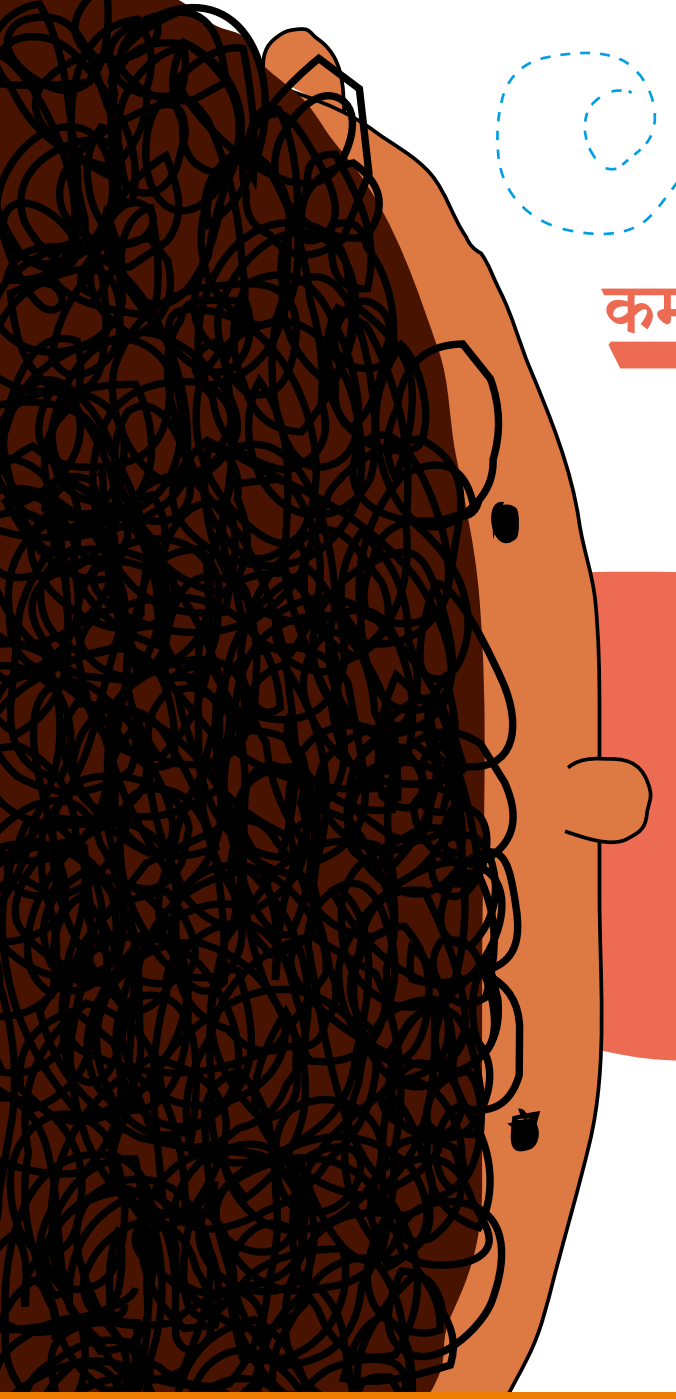

कमाल की जीभ!

डॉ एन कृष्णास्वामी
चित्राँकनः श्रेया कसत

कथा की 300एम थिंकबुक

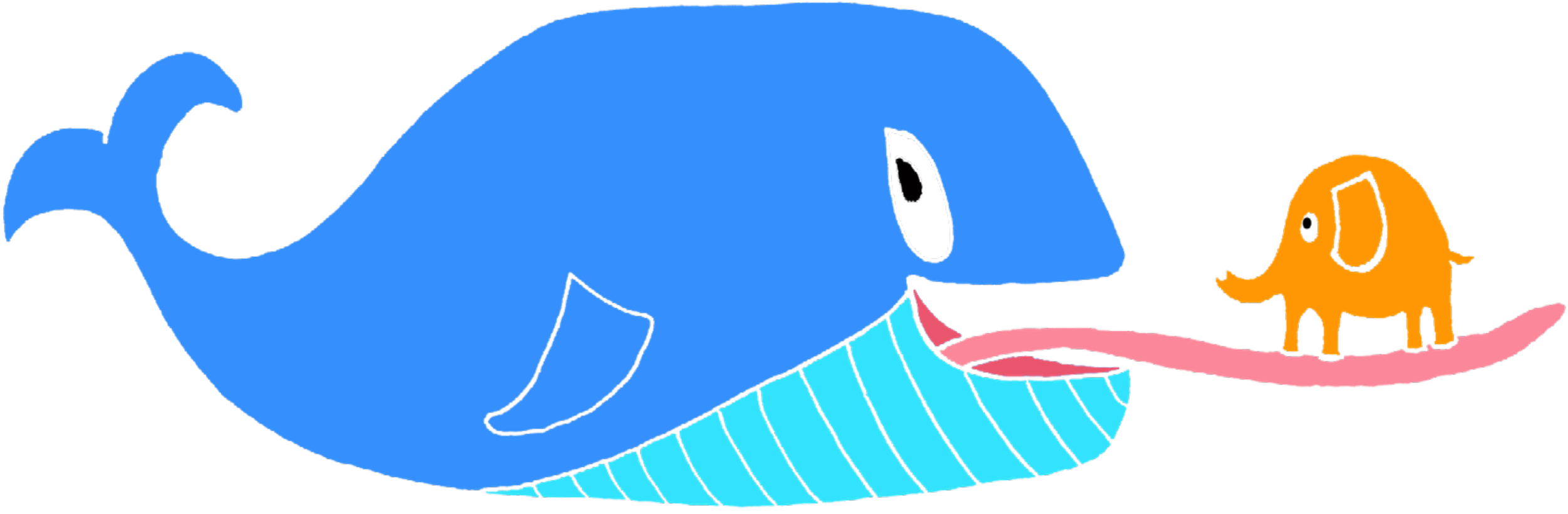

डॉक्टर बनना चाहोगे? आओ,
कुछ मज़ेदार बात बताती हूँ!

हमारा शरीर कमाल का है।
इसको कमाल बनाने वालों में से हूँ मैं!

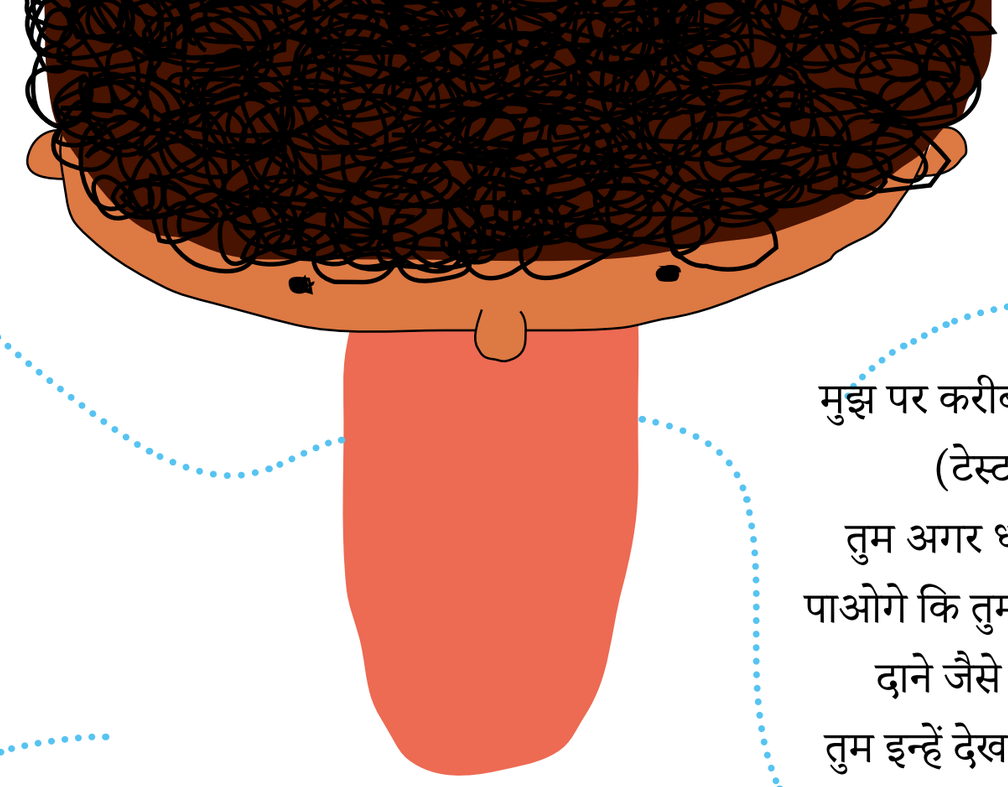

मैं पूरे शरीर में सबसे मज़बूत और लचीली मांसपेशी हूँ। और मैं अकेली ऐसी मांसपेशी हूँ जो केवल एक ही छोर से शरीर से जुड़ी है।

मुझ पर करीब ८००० स्वाद कलिकाएं (टेस्ट बड्स) होती हैं। तुम अगर ध्यान से महसूस करो तो पाओगे कि तुम्हारी जीभ पर छोटे-छोटे, दाने जैसे आकार के उभार हैं। तुम इन्हें देख भी सकते हो। पर इनके ऊपर होती हैं तुम्हारी स्वाद-कलिकाएं, जिन्हें तुम देख नहीं सकते।

वैसे तो मैं सभी जानवरों में होती हूँ। पर तुम्हारे पास कुछ ऐसा है, जो और किसी जानवर में नहीं। कोई और जानवर तुम्हारी तरह खाने का स्वाद नहीं ले सकता।

क्या तुम अंदाज़ा लगा पाए कि मैं कौन हूँ? **मैं तुम्हारी जीभ हूँ!** मैं अनूठी हूँ! ठीक तुम्हारे उँगलियों के निशान की तरह। मैं तुम्हारे शरीर में एक ख़ास स्थान रखती हूँ। किसी और की जीभ तुम्हारे जैसी नहीं है।

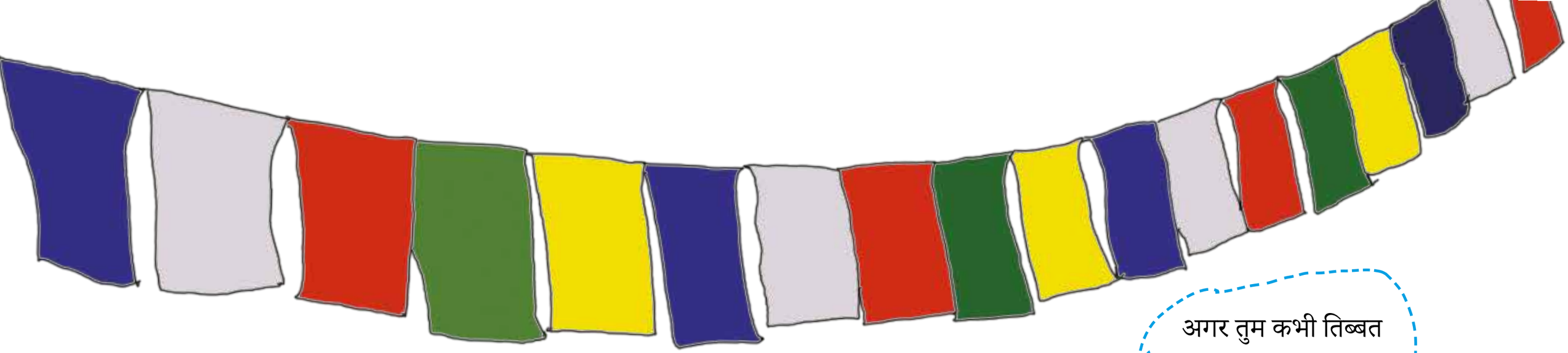

खट्टा-मीठा, ठंडा-गरम
यह सब तुम्हें मेरे द्वारा ही पता चलता है। कभी आइसक्रीम खानी हो, तो मेरे द्वारा ही तुम उसका स्वाद ले पाते हो। तुम्हारे सूखे होठों को मैं नमी दे सकती हूँ। और कभी तुम्हें सीटी बजानी हो, तो वह भी मैं कर सकती हूँ!

मैं तुम्हें खाने का स्वाद लेने में मदद करती हूँ। और बुरे स्वाद की पहचान भी कराती हूँ!

मैं बोलने में तुम्हारी मदद करती हूँ!

अगर तुम कभी तिब्बत जाओ, तो अपने दोस्तों को जीभ निकल कर 'हेलो' करना।

जीभ के बारे में कुछ अद्भुत बातें!

अरे, हाँ! जानवरों की जीभ भी कुछ कमाल की चीज़ें कर लेती हैं!

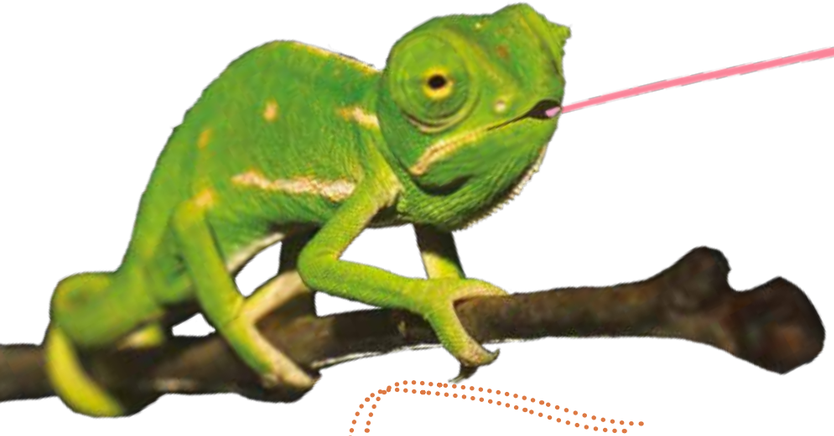

1 कुत्ते और बिल्लियाँ मेरा इस्तेमाल खुद को साफ़ रखने के लिए करते हैं। लेकिन गिरगिट, मेढक और चींटीखोर लिए मैं शिकार भी करती हूँ।

2 गिरगिट की जीभ उसके शरीर से दोगुनी लम्बी होती है।

3 जिराफ़ की जीभ ५३ सेंटीमीटर लम्बी होती है। इस पर ब्रश नुमा कांटे लगे होते हैं। इसी की मदद से जिराफ कांटेदार पत्ते खाते हैं।

4 कठफोड़वे की जीभ उसके सिर को चारों तरफ़ से लपेट सकती है। यह कंटीली और चिपचिपी होती है जिससे छोटे-छोटे बिल में से कीड़ों को निकाल सके।

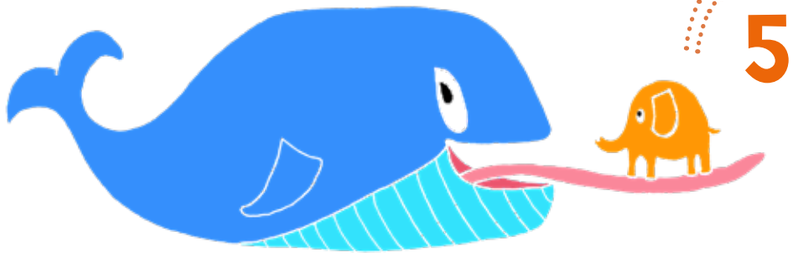

5 एक ब्लू व्हेल की जीभ ५४०० पौंड की होती है। यह तो कुछ हाथियों से भी भारी है!

साफ़ जीभ की जांच!

शीशे के आगे खड़े हो जाओ! अपनी जीभ बाहर निकालो और देखो-अगर तुम्हारी जीभ सफ़ेद है, तो उस पर बैक्टीरिया हैं। तुम्हें दोबारा मंजन करने कीज़रूरत है। अगर वह गुलाबी है, तो वह साफ़ है।

जीभ की जलेबी!

इन वाक्यों को जल्दी-जल्दी छह बार कहो। देखो कैसे तुम्हारी जीभी की जलेबी बन जाएगी!

कच्चा पापड़ पक्का पापड़

चार कचरी कच्चे चाचा, चार कचरी पक्के!

ब्लू ब्लड
बैड ब्लड
ब्लू ब्लड
बैड ब्लड...

श्रेया कसत एक विजुअल डिजाइनर हैं।

कथा

कथा एक विश्व स्तर पर मान्यता प्राप्त गैर–लाभकारी संस्था है जो कि शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में सन् 1988 से काम कर रही है। गरीबी में रहने वाले बच्चों की शिक्षा को बढ़ावा देने का व उनके लिए विशेष किताबें बनाने का कथा के पास लगभग 30 साल का अनुभव है।

"भारत के मुकुट पर एक शैक्षिक हीरा!" **– नाओकी शिनोहरा, उपप्रबंध निर्देशक, आईएमएफ**

"कथा का काम इस विचार से प्रेरित है कि बच्चे अपने समुदायों में स्थायी बदलाव ला सकते हैं। जैसे कि बच्चे करते हैं (कथा की किताबों में)।" **– पेपरटाइगर्स**

"कथा बच्चों के लिए नर्म दिल है। तभी तो कथा बच्चों के लिए इतनी खूबसूरत किताबें बनाती है।" **– टाइम आउट**

"कथा दुनिया भर में उन रचनात्मक संगठनों के लिए एक उदाहरण है जो शहरों के सुधार के लिए काम करते हैं।"

– चार्ल्स लैंड्री, ***द आर्ट ऑफ़ सिटी मेकिंग***

हिंदी संस्करण 2021

कृति स्वामित्व © कथा, 2021
मौलिक लेखन कृति स्वामित्व © डॉ एन कृष्णास्वामी
चित्राँकन कृति स्वामित्व © कथा
स्वत्वाधिकार सुरक्षित। प्रकाशक की आज्ञा के बिना इस किताब के किसी भी भाग को छापना अथवा अन्य किसी पुनः प्रयोग विधि के रूप में प्रतिकृति या इस्तेमाल वर्जित है।

नयी दिल्ली द्वारा मुद्रित

हमारा लक्ष्यः हर बच्चा आनंद और अर्थवत्ता के लिए पढ़ें।

कथा एक पंजीकृत आलंमकारी संस्था है जिसकी स्थापना 1988 में किया गया था। कथा शिक्षा और साहित्य के क्षेत्र में काम करती है। कथा का मुख्य उद्देश्य है बच्चों और बड़ों में पढ़ने में रूचि एवं इससे मिलती खुशी को बढ़ावा देना। कथा 1,00,000 से भी अधिक बच्चों के साथ काम करती है ताकि वे मजे के लिए और कक्षा स्तर पर पढ़ सकें।

ए–3 सर्वोदय एन्क्लेव, श्री औरोबिन्दो मार्ग, नयी दिल्ली – 110017
दूरभाषः 4141 6600 - 4141 6624 - 4182 9998
इ–मेलः marketing@katha-org
वेबसाइटः www-katha-org | www-books-katha-org

इस किताब की बिक्री में मिली राशि का 10% बच्चों की शिक्षा के लिए कथा स्कूल को दिया जाएगा।
कथा नियमित रूप से उस लकड़ी के बदले पेड़ लगाती है, जिससे हमारी किताबों को छापने का कागज बनता है।

यह सभी आई.एल.आर किताबें हैं

आनंद और समझने के लिए पढ़ो

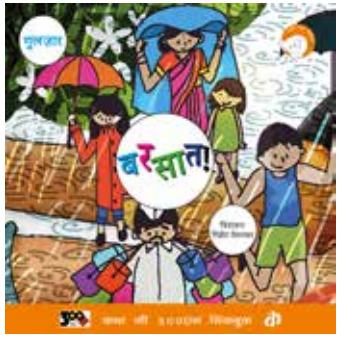

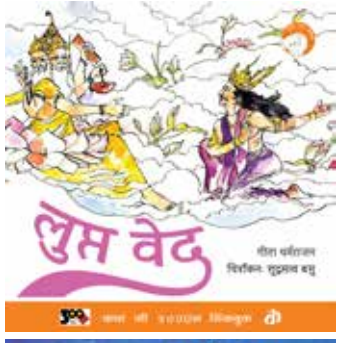

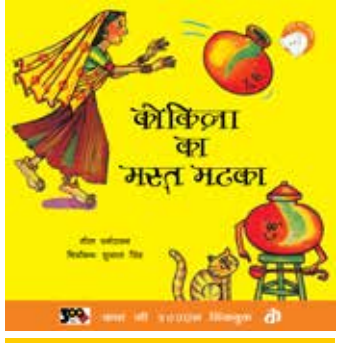

FOR OUR BOOKS

www.books.katha.org

"[Katha]...a special and unique moment in Indian Publishing history."

— The iconic The Economic Times

for children
a katha book
ISBN 978-93-88284-81-3
9 789388 284813
www.katha.org
₹ xxx

इसकी ओरेंज श्रृंखला में